"सृजनात्मकता के तत्व"

J.P. गिलफोर्ड के अनुसार — "(Guilford) — इन्होने सृजनात्मकता के कुल ५ तत्व बताइये है —

① तात्कालिक स्थिति से परे जाने की योग्यता।
Ability to go beyond the current situation।

② समस्या की पुनर्व्याख्या।
Re-explanation of Problem.

③ सामंजस्य।
(Adjusrment)

④ अन्यों के विचारों मे परिवर्तन।
Changing the thoughts of others.

① तात्कालिक स्थिति से परे जाने की योग्यता

जो व्यक्ति वर्तमान परिस्थितियों से हटकर उससे आगे की सोचता है और अपने चिन्तन को मूर्त रूप देता है, उसमे सजनात्मक तत्व पाया जाता है।

② समस्या की पुनर्व्याख्या

समस्या की व्याख्याता नेता, वकील, अध्यापक अपने ढंग से करते है इसे ही समस्या की पुनर्व्याख्या कहते है।

③ सामंजस्य

असामान्य प्रासंगिक, विचारों, तथ्यो के बीच (साथ) यदि समन्वय (सम्बन्ध) स्थापित कर लेता है तो वह सामंजस्य कहलाता है।

④ अन्य के विचारों में परिवर्तन

जो व्यक्ति दूसरे के विचारों में तर्क व चिन्तन द्वारा परिवर्तन कर दे उसमे भी सृजनात्मकता पाया जाता है।

सृजनात्मकता के स्तर का सिद्धान्त
"Levels of Creativity"

I.A टेलर Taylor (1954) के अनुसार — " इनके अनुसार सृजनात्मकता के पांच स्तर है।

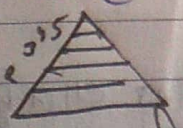

1- अभिव्यंजक (या अभिव्यक्ति) सृजनात्मकता (Expressive Creativity) (Expression creati) - निम्न स्तर
2- उत्पादक " " (Productive Creativity)
3- आविष्कारशील " " (Innovative ")
4- नवाचारात्मक " " (Modified ") मूर्तवस्तुएं — High मूर्तवस्तु (उच्च स्तर)
5- आविर्भावात्मक " " (Originative) अमूर्त — उच्चतम स्तर / उच्चतम

① अभिव्यंजक सृजनात्मकता

अर्थ! — इस प्रकार की सृजनात्मकता में कौशल (Skills), मौलिकता (Originality) तथा उत्पादों की गुणवत्ता इतनी महत्वपूर्ण नहीं होती जितनी सृजनकरने की प्रक्रिया होती है। ये निम्न स्तर की होती है।

② उत्पादक सृजनात्मकता

अर्थ → इसमे कलात्मक व वैज्ञानिक उत्पाद शामिल किये जाते है। जहां स्वतन्त्र क्रियाओं को नियंत्रित या सीमित करने तथा परिष्कृत उत्पादों का निर्माण करने के लिये प्रविधियां विकसित करने की प्रवृत्ति होती है। "किसी वस्तु से नई वस्तु का निर्माण करना"

③ आविष्कारशील सृजनात्मकता

इसमे अन्वेषक या जांचपड़ताल करने वाला व्यक्ति सामग्री, विधि, माध्यम और प्रविधियों का प्रयोग करने मे अपनी निपुणता प्रदर्शित करता है। "पुरानी चीजो से कुछ नयी चीजो का निर्माण करना" Ex- चण्डीगढ़ का पार्क

④ नवाचारात्मक सृजनात्मकता (मूर्तवस्तुएं) Concrete

इस नवाचार सृजनात्मकता के अन्दर रूपान्तरण व सुधार आता है इसमे परिस्थिति के अनुसार परिवर्तन ला सकते है। ये उच्च स्तर कहलाता है।

उद्‌घाटनात्मक स्तर / ⑤ आविर्भावात्मक सृजनात्मकता (अमूर्त वस्तुएं)

इसमे नये नियमो या मान्यताओं का विकास होता है तथा जिनके आधार पर कला लेखन, संगीत, विज्ञान आदि सम्प्रदाय विकसित होते है। (Abstract)

जीन प्याजे की 3-4 अवस्थाओं मे अन्तर है।

"सृजनात्मकता के प्रकार"

Types of Creativity

टॉरेन्स (Tarrance E.P) के अनुसार ⇒ इन्होंने सृजनात्मकता को दो भागों में बाँटा है —

सृजनात्मकता
- शाब्दिक सृजनात्मकता (Verbal Creativity)
- अशाब्दिक-सृजनात्मकता (Non-Verbal Craitivity)

(1) शाब्दिक सृजनात्मकता

अर्थ — वह सृजनात्मकता जिसको भाषा तथा शाब्दिक सामग्रियों के रूप में प्रकट किया जाता है। जैसे — कहानी, लिखना, चुटकुला बनाना आदि। मानसिक योग्यता को भी शाब्दिक सृजनात्मकता कहेंगे।

(2) अशाब्दिक-सृजनात्मकता

वह सृजनात्मकता जिसको आकृति, रेखा, अशाब्दिक सामग्री द्वारा प्रकट किया जाये जैसे — चित्रकारी करना, खिलौना बनाना आदि।

सृजनात्मकता की विमाएँ (मापन (पहलुओं, लक्षण)

सृजनात्मकता के प्रकारों के आधार पर ही सृजनात्मकता की कुछ विमाऐं भी है जिन्हें टॉरेन्स ने दो भागों में बाँटा है।

सृजनात्मकता की विमाएँ।
- शाब्दिक सृजनात्मकता की विमाएँ
  1— धाराप्रवाह (2) लचीलापन (3) मौलिकता
- अशाब्दिक सृजनात्मक की विमाएँ
  (1) विस्तारणा (2) मौलिकता (चित्रों द्वारा आकृति द्वारा

Scanned with CamScanner

सृजनात्मकता के प्रकार

1. आकस्मिक सृजनात्मकता – वह सृजनात्मकता जो अचानक (भाग्यवश) हो।
2. सहज सृजनात्मकता – वह सृजनात्मकता जो तात्कालिक परिस्थिति में उत्पन्न होती है।
3. संरक्षात्मक सृजनात्मकता – वह सृजनात्मकता जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में पहुँचती है। कुम्हार का पुत्र अच्छे बर्तन बना लेता है।

सृजनात्मकता विकास की अवस्थाएं / प्रक्रिया

मन (Munn) ! — अपनी पुस्तक "Introduction to Psychology"

1 – तैयारी की अवस्था (Preparation) समस्या का चयन
2 – उद्भवन (incubation) समस्या को एक तरफ रखना
3 – उद्भासन (inspiration or Illumination) प्रकाशोद्भासन प्रेरणा / सहजबोध
4 – मूल्यांकन (Evaluation)
5 – पुनरावर्तन (Revision)

(1) तैयारी की अवस्था

इस अवस्था में समस्या पर गम्भीरता से कार्य आरम्भ किया जाता है और यह तब तक जारी रहता है जब तक संभव हो। समस्या का प्रारंभिक विश्लेषण किया जाता है और उसके समाधान के लिये मंच तैयार किया जाता है। आवश्यक तथ्यों तथा सामग्री को एकत्रित किया जाता है, उनका विश्लेषण किया जाता है। बीच-2 में योजना में सुधार किया जाता है। विधि को भी बदला जा सकता है। कभी-2 समस्या का समाधान नहीं कर पाते, निराश हो जाते हैं इस समय समस्या को कुछ देर के लिये छोड़ देना चाहिए।

(2) उद्भवन (incubation)

वह प्रक्रिया जब किसी समस्या का समाधान नहीं हो पा रहा होता उस समस्या को कुछ समय के लिये बाहर / दूर रख देना चाहिए उसे उद्भवन या समस्या को एक ओर रखना कहते हैं। इस अवस्था में समस्या पर चिंतन भी बंद हो जाता है। इस अवस्था में हम विश्राम कर सकते हैं, सो सकते हैं, मनोरंजक कार्य कर सकते हैं। ऐसा करने से विचार मालूम होने लगते हैं जो समस्या में बाधक बन रहे थे। इस समय अचेतन मन काम करने लगता है। उदाहरण – आर्किमिडीज को अपनी समस्या का समाधान तब मिला जब वह नहा रहे थे।

सृजनात्मकता की उन्नति (विकास) हेतु सुझावों / उपायों का वर्णन

Measures (उन्नति)
Suggestions (उपाय)

"Suggestions for Fostering Creativity"
or
"Measures for Creativity enhancement"

सृजनात्मकता को विकसित / पोषित करने के लिए उचित वातावरण एवं देखरेख की आवश्यकता होती है। इसे उचित प्रोत्साहन दिया जाये, शिक्षा, अवसर दिए जाये ताकि वह सृजनशील बन सके। सृजनात्मकता सार्वभौमिक होती है। इस पर किसी एक व्यक्ति का एकाधिकार नहीं होता है।

अध्यापकों व माता-पिता को यह आवश्यक है कि वह बालकों की सृजनात्मक योग्यता के विकास को उचित वातावरण व अवसर दे, शिक्षा दे आदि उचित अभिप्रेरणा व वातावरण, परिस्थिति से सृजनात्मकता का बढ़ाया जा सकता है — मौलिकता, लचीलापन, प्रवाहात्मक, विचारधारा, विविधता, आत्मविश्वास, सतत परिश्रम, संवेदनशीलता, संबन्धों को देखना बनाने की योग्यता आदि कुछ योग्यताओं है जिनका विकास सृजनात्मकता के विकास में सहायक सिद्ध हो सकता है। इन योग्यताओं को विकसित करने के लिए निम्नलिखित सुझाव सहायक सिद्ध हो सकते है जैसे —

1. उत्तर देने की स्वतन्त्रता।
2. झिझक और डर को दूर करना।
3. आत्म-अभिव्यक्ति के लिए अवसर।
4. मौलिकता तथा लचीलेपन को प्रोत्साहित करना।
5. सृजनात्मकता अभिव्यक्ति के लिए उचित अवसर व वातावरण प्रदान करना।
6. बच्चों में स्वस्थ आदतों का विकास करना।
7. समुदाय के सृजनात्मक साधनों का प्रयोग करना।
8. अपना उदाहरण एवं आदर्श प्रस्तुत करना।
9. सृजनात्मकता चिंतन के अवरोधों से बचना।
10. पाठ्यक्रम का उचित आयोजन।
11. मूल्यांकन प्रणाली में सुधार।
12. आत्म सजगता
13. स्वयं निर्णय लेने की क्षमता।

JANUARY — 2019 — M T W T F S S M T W T F S S M T W T F S S M T W T F S S M T W T F S S
- 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 - - - -

Scanned with CamScanner

सृजनशीलता का आधार
B.asis of Creativity

J.P. गिलफोर्ड के अनुसार — " सर्जनात्मक का आधार चिंतन है। चिंतन और सर्जन के संबन्ध में सर्वप्रथम विचार गिलफोर्ड ने विचार किया। गिलफोर्ड के अनुसार सृजनात्मकता के अन्तर्गत 5 मानसिक व्यवहारों को रखा है —

1— संज्ञान (Congnition) — मानसिक योग्यता
2. स्मृति (Memory)
3 — अपसारी चिंतन (Divergent Thinking) — सृजनात्मकता
4 — अभिसारी चिंतन (Convergent Thinking) (बुद्धि से सम्बन्धित)
5 — मूल्यांकन (Evaluation)

③ अपसारी चिंतन का अर्थ ! — जब किसी बालक को चिन्तन के अनेक विकल्प और विचारों को अलग-2 दिशाओं में फैलाने का अवसर दिया जाता है तो इसे अपसारी चिंतन कहते है। जैसे — "Out of the box Thinking"। Exp- भारत की वर्तमान शिक्षा का उल्लेख कीजिए।

④ अभिसारी चिंतन का अर्थ। यह केवल एक ही बिन्दु पर आधारित होता है उसे अभिसारी चिंतन कहलाता है इसमें अधिक विकल्पों और विचारों के फैलाव को स्थान नहीं होता है। Exp = ताजमहल कहाँ है? Ans. एक होगा आगरा।

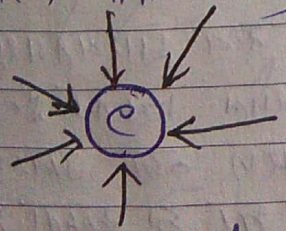

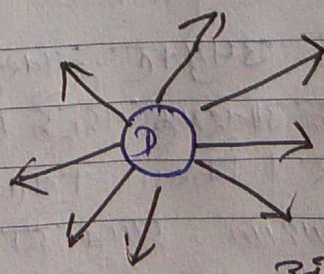

Life outside the Box
Convergent VS Divergent thinking

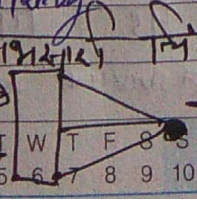

(बुद्धि जिसमे पायी जाती)

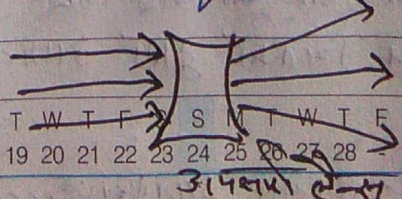

Q— V.P. की राजधानी कहाँ है?

Q— उत्तर प्रदेश में कौन कौन से जिले हैं?

Scanned with CamScanner